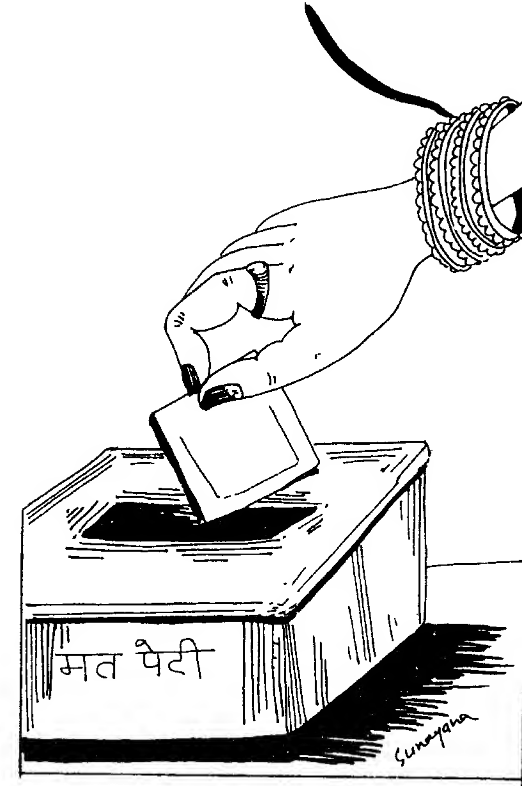
तमिल कहानियां



तमिल कहानियां



कहानियों के बारे में

बहू ने डाला वोट : कृष्णन नम्बी की मूल तमिल कथा 'मरूमगल वक्कू' का नवसाक्षरों हेतु तमिल रूपांतरण एस. तमिल सेल्वन ने किया जिसका प्रो. पी. के. शशिधरन ने 'द डॉटर इन ला वोट्स' के नाम से अंग्रेजी में अनुवाद किया।

लोमड़ी की कहानी : यह तमिल लोककथा है। तमिलनाडु के कामराज जिले के गांव विजयरामपेरी के नव-साक्षर एन. मायाकृष्णन ने जिस रूप में इस कथा को सुनाया उसी पर आधारित है यह अनूदित रूप।

भयंकर बरसात : गंधर्वन द्वारा तमिल में लिखित 'पेमझाई' तथा उन्हीं द्वारा अंग्रेजी में 'हार्ड रेन' नाम से रूपांतरित कहानी का यह हिंदी अनुवाद है।

कन्नगी की कहानी : यह कहानी इलैंगो अडिगल द्वारा लिखित तमिल वीरगाथा-कालीन प्रख्यात ग्रन्थ 'सिलप्पातिकारम्' का संक्षिप्त रूप है। तमिल भाषा में 'कन्नगी कथै' के नाम से प्रो. एस. मादास्वामी ने नवसाक्षरों के लिए रूपांतरण किया। इसका अंग्रेजी अनुवाद किया प्रो. पी. के. शशिधरन ने। कन्नगी की कथा, दक्षिण भारत, खासकर तमिलनाडु, में बहुत लोकप्रिय है। प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार अमृत लाल नागर का उपन्यास 'सुहाग के नूपुर' इसी कथा पर आधारित है। हिन्दी में इस कहानी पर आधारित एक दूरदर्शन धारावाहिक भी आ चुका है।

(इन चारों कहानियों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद के. बी. सिंह ने किया है।)



कथा-क्रम





बहू ने डाला वोट

रुक्मिणी आज बहुत खुश है। पिछले दो दिनों से उसकी उत्तेजना अपने चरम पर है, क्योंकि उसकी सास मीनाक्षी अम्माल ने कह दिया है कि बहू घर से बाहर निकल कर चुनाव में वोट डालने जाएगी। उसकी खुशी के दो कारण हैं। एक तो वह कई महीनों के बाद पहली बार घर के बाहर जा सकेगी। इस घर में बहू बन कर आने के बाद रुक्मिणी एक बार भी बाहर नहीं गई है। वोट स्कूल में डाले जाएंगे और स्कूल गांव के आखिरी सिरे पर है। इसलिए वह गलियों से चलती हुई स्कूल तक जाएगी। अपने आप में ही यह मामला खुश होने के लिए काफी है। पर केवल यही उसकी उत्तेजना का कारण नहीं है, बल्कि एक और वजह भी है।

वैसे तो मोटे तौर पर उसकी सास मीनाक्षी अम्माल भली औरत थी। वह पड़ोसियों से झगड़ा नहीं करती थी और दूसरों की बुराई करने में अपना समय नहीं खराब करती थी। वह पूरी तरह संतुलित बात करती, दूसरे के शब्दों को गौर से सुनती और नपी-तुली बात करती। अधिकतर दूसरी महिलाएं उसके बारे में यही सोचती थीं कि 'यह कैसी औरत है?' क्या एक औरत को अपने पड़ोसियों से बात करने में थोड़ा समय नहीं खर्च करना चाहिए? क्या किसी औरत को थोड़ी गप्पबाजी नहीं करनी चाहिए? दूसरी औरतें मीनाक्षी अम्माल के 'गैर-औरताना' तौर-तरीकों को पसन्द नहीं करती थीं।

मीनाक्षी अम्माल चाहती थी कि उसकी बहू भी उसी के जैसी हो। वह बहू को इसी हिसाब से आदेश देती। यदि भूले-भटके कभी कोई आकर रुक्मिणी से बातें करने लगता तो मीनाक्षी अम्माल उन पर चिल्ला पड़ती, 'तुम लोग क्या गप्पें उड़ा रही हो? मेरी आवाज सुनी कि नहीं? मैं कह रही हूं......।' यह दूसरी पड़ोसी औरतों से उसकी कड़वाहट का एक कारण था। पड़ोसिनें सास-बहू के बीच झगड़ा लगवाने की भरपूर कोशिशें कर रही थीं। पर वे जितनी भी मेहनत करतीं, सब बेकार हो जाती। भला ऐसा कैसे होता था? रुक्मिणी कभी सास के खिलाफ मुंह नहीं खोलती और न दिल को लगने वाली कोई बात अपने होठों पर आने देती थी। यदि वह किसी पड़ोसिन से बात करना भी चाहती तो उसके पास इसके लिए समय ही नहीं था।



घर में एक गाय पली थी जिसका नाम लक्ष्मी था। गाय बहुत अच्छी थी, कुछ-कुछ उसी तरह जैसे घर के लिए देवी लक्ष्मी हो। सास को यह गाय अपनी जिन्दगी की तरह प्यारी थी। लक्ष्मी रोज चार लीटर दूध देती। घर से ही यह दूध बेचना उसकी सास का मुख्य काम था।

यदि किसी दिन दूध सौ ग्राम भी कम होता तो मीनाक्षी अम्माल का गुस्सा फूट पड़ता। वह रुक्मिणी से कहती, 'तुमने जानवर को ठीक से खिलाया या उसका भी हिस्सा खा गई?' और यह तो बस शुरुआत भर होती। सास चाहे जितना गुस्सा करती, पर रुक्मिणी अपना मुंह न खोलती। वह चुपचाप सारा काम करती रहती। गौशाला का काम खत्म होने का नाम ही नहीं लेता था। सवेरे वह न जाने कितने घड़े पानी भर कर गाय को नहलाती। लक्ष्मी पर पानी डाल कर वह खरहरे से उसे साफ करती। उसे गौशाला को साफ करने और गोबर इकट्ठा करने का काम करना होता था। वह गाय के लिए खली और भूसा मिला कर नांद में भरती। उसे गाय का दूध भी निकालना होता था।

जब वह गौशाला में न होती तो रसोई में होती। उसके पास बहुत ज्यादा काम था। गाय की सानी-पानी करते समय उसे दौड़ कर अपने पति को खाना खिलाना पड़ता। गाय को पानी पिलाते समय उसे दौड़ कर अपनी सास को कॉफी पिलानी पड़ती। आप कल्पना कर सकते हैं कि बेचारी लड़की के लिए यह कितनी बड़ी मुसीबत थी। मगर मरियल-सी दिखने वाली यह लड़की सारा काम कर लेती थी। वह लड़की माचिस की तीली या किसी लकड़ी की किर्च से ज्यादा मोटी नहीं थी। वास्तव में उसका इतना ज्यादा काम करना अपने आप में एक चमत्कार था। काम करवाने में उस्ताद सास खुद भी एक मिनट के लिए खाली नहीं बैठती थी। वह भी हर समय कुछ न कुछ करती रहती थी जैसे कॉफी पीना, पान खाना, दूध बिक्री का हिसाब देखना, अपने लड़के की तनख्वाह ले लेना, किये गये खर्च की वजहें पूछना और बेचारी मासूम बहू से ज्यादा से ज्यादा काम करवा लेना। इस तरह सास के पास भी बहुत ज्यादा काम था।



लड़की को काम देना और उसे लगातार हिदायतें देना ही उसके लिए बड़ा भारी काम था। रुक्मिणी पूछती, 'अत्तै! (बहू द्वारा सास को तमिल में आम तौर से अत्तै कहा जाता है) क्या मैं चौथाई कटोरा चावल पकाऊं?' इस पर सास आदेश देती, 'क्या तुम समझती हो कि सिर्फ तुम्हें ही खाना है? आधा कटोरा पकाओ।' अगले दिन लड़की फिर पूछती, 'क्या मैं आधा कटोरा चावल पकाऊं?' इस पर सास चिल्लाकर कहती, 'क्या तुम गली के सारे लोगों को दावत देने जा रही हो? चौथाई कटोरा काफी है।' इसी तरह जब रुक्मिणी सास की राय मांगती, 'क्या मैं आज पुड़ीकुड़म्बु (इमली डाल कर बनाया गया एक प्रकार का सुगन्धित रस) बनाऊं?' इस पर सास फटाक से जवाब देती, 'क्या घर में कोई मर गया है जो तुम पुड़ीकुड़म्बु बनाओगी? सांभर बनाओ।' अगली बार जब लड़की सांभर बनाने के बारे में पूछती तब उसे यह कड़वा जवाब सुनना पड़ता-'पता है दाल किस भाव बिक रही है? रोज सांभर बनाने से क्या हमारा परिवार अमीर हो जाएगा? पुड़ीकुड़म्बु बनाओ।' बुढ़िया सास चाहे जो कुछ कहे, रुक्मिणी अपनी मरी-सी आवाज में 'जी, अत्तै' के अलावा और कुछ न कहती। खाने के समय सास कहती, 'अपना खाना कम करो। ज्यादा मत खाया करो, नहीं तो तुम्हारा शरीर बेशक्ल हो जाएगा, स्वास्थ्य खराब जाएगा'। इतना कहना काफी था। रुक्मिणी कभी भी एक कटोरी से ज्यादा खाना न खाती।



गौशाला में बंधी लक्ष्मी, रुक्मिणी की एकमात्र मित्र थी। इस गाय के साथ ही वह अपने विचार बांट सकती थी। उसे खिलाते समय भी रुक्मिणी उससे बातें करती रहती। वह कहती, 'अब बताओ भला यह क्या बात हुई? क्या तुम्हारी और मेरी सास के खाने की कोई सीमा नहीं होनी चाहिए? क्या तुम भी मादा नहीं हो?' हर चीज के जवाब में लक्ष्मी अपना सिर हिला देती। इस पर रुक्मिणी यह कहते हुए गाय की पीठ पर हल्की-सी प्यार भरी थपकी लगा देती, 'हां, हां, मैं चाहे जो कुछ कहूं, तुम बेवकूफ-सी बस अपना सिर हिला देती हो'। रुक्मिणी अपनी सास से जो कुछ भी कहना चाहती थी पर उसके मुंह पर कह नहीं पाती थी, वह सब वह लक्ष्मी के सामने उड़ेल देती थी। उसका अपना पति बहुत मासूम था। वह अपनी मां से पूरी तरह बंधा हुआ था। वह सपने में भी अपनी मां के खिलाफ बोलने की बात नहीं सोच सकता था। पति उसकी कोई बड़ी सहायता या समर्थन नहीं करता था, पर उसने कभी उसे किसी तरह से परेशान नहीं किया था।

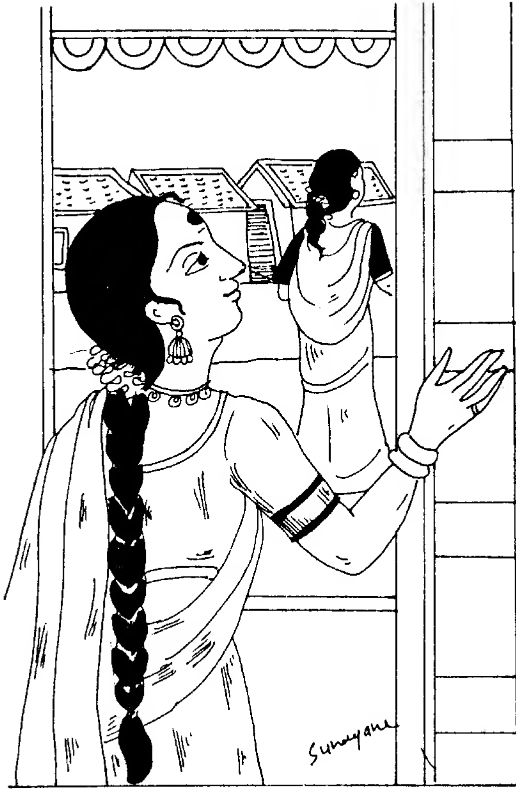


इसी तरह एकरस जिन्दगी चलती चली जा रही थी। उसमें किसी तरह का कोई बदलाव नहीं था कि ग्राम पंचायत के चुनाव आ गए। इसमें दो विरोधी प्रधान पद के दावेदार बन गये। रामास्वामी बिल्ली चुनाव निशान पर लड़ रहा था। उसके प्रतिद्वंद्वी वीरबाहु का निशान तोता था। लड़ाई तगड़ी थी। पूरा गांव दो खेमों में बंट गया। गलियां नारों से गूंज गईं। अभियानों, नसीहतों और मिन्नतों आदि से गलियां दिन-रात गूंजने लगीं।



वीरबाहु दूध का बड़ा व्यापारी था। उसकी डेरी में करीब 20 दुधारू गायें थीं। गांव के आधे परिवार उससे दूध लेते थे। वह काफी उदार और खुले दिमाग का आदमी था। वह दूध में उदारतापूर्वक पानी मिलाता था और दूध उधार भी दे देता था। इसलिए वीरबाहु को विश्वास था कि उसके ग्राहक परिवारों के सभी वोट उसे ही मिलेंगे, पर मीनाक्षी अम्माल बिल्कुल अलग तरह से हिसाब लगा रही थी। वीरबाहु दूध में खूब पानी मिला कर बेचता है, इसलिए उससे लोग नाराज हैं। उसे एक भी वोट नहीं मिलेगा। चाहे जो कुछ हो जाए पर हार तो वह जाएगा ही। आखिरकार दूध में पानी मिलाते समय वह थोड़ा सोचती थी। नहीं वह कभी गलत नहीं सोचती थी और कम से कम दस परिवारों को दूध बेचती थी। उधार देना उसके बस का नहीं था और इसके कुछ खराब नतीजे थे। कुछ परिवारों ने मीनाक्षी अम्माल को छोड़ दिया था और वीरबाहु से दूध लेने लगे थे। इस प्रकार व्यापार में उसके प्रतिद्वंद्वी ने उस पर एक बढ़त हासिल कर ली थी। मीनाक्षी अम्माल इससे दुखी थी।

उसने अपने लड़के और बहू को बुलाया। उसका गंभीर निर्देश इस तरह था, 'तुम्हें अपना वोट बिल्ली निशान पर देना है। वीरबाहु के तोते को चुनाव में हार जाना चाहिए। मेरे शब्दों को अच्छी तरह याद कर लो और इन पर अमल करो।' 'जी, अत्तै' कह कर रुक्मिणी उसके सामने से हट गई। वह सीधे गौशाला में लक्ष्मी के पास आई। उसने लक्ष्मी से पूछा, 'लक्ष्मी तुमने यह बात सुनी? वह चाहती है कि मैं बिल्ली को वोट दूं। तुम मुझे जानती हो। तुम्हीं बताओ मैं किसे



वोट दूं?' रुक्मिणी इसी तरह लक्ष्मी से बातें करती रही और लक्ष्मी अपना सिर इस तरह दाहिने-बांये हिलाती रही जैसे वह सब कुछ जानती हो। रुक्मिणी ने बड़े प्यार से अपनी बांहें उसकी गर्दन में डाल दीं और पूछा, 'तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ?' रुक्मिणी ने फिर पूछा, 'अच्छा, तुम भी बिल्ली को नहीं पसंद करती हो?' और जैसे घोषणा करती हुई बोली, 'मेरा वोट तोते के लिए'। थोड़ी देर वह और लक्ष्मी के पास रही और पूरे समय चुनाव की बात करती रही। इसके बाद वह रसोई में चली गई। गौशाला छोड़ते समय भी उसने लक्ष्मी को चेतावनी देते हुए कहा, 'लक्ष्मी! किसी और से न कहना कि मैं तोते को वोट देने जा रही हूं'।

लक्ष्मी अम्माल अपने दूध व्यापार के साथ राजनीति कर लेती थी। दूध बेचने के साथ वह बिल्ली चुनाव निशान का प्रचार भी करती रहती। वह उन लोगों को भी नहीं छोड़ती थी जो गली में अपने काम से निकलते थे। इस पर रुक्मिणी को अपनी हंसी रोकना मुश्किल होता, पर वह बुढ़िया सास द्वारा किए जाने वाले बेहूदा प्रचार पर जोर से हंस भी नहीं सकती थी। वह भीतर ही भीतर हंसती। यह विचार बहुत आनन्ददायक था कि सास का एक गद्दार उसी परिवार में छिपा है। उसका दिल उत्तेजना से भरा था। वह तेजी से धड़धड़ाता रहता।

चुनाव का दिन आया। गांव सवेरे ही सवेरे जीवन्त हो उठा। रुक्मिणी के

पति नहाने घाट पर गये थे। वह वहीं से गीली धोती में चुनाव बूथ तक ले जाये गये। चुनाव कार्यकर्ताओं को इतना जोश था। उस बेचारे को अपना वोट इस तरह डालना पड़ा। वोट डालने के बाद वह घर लौट आया। सास ने भी स्नान किया, कोड़म्बक्कम की बनी मंहगी साड़ी पहनी, स्कूल गई और वोट डाल कर घर लौट आई।

रुक्मिणी का काम अभी पूरा नहीं हुआ था। वह हर समय तोते के बारे में सोचती रही। उसने लक्ष्मी से पूछा, 'भगवान ने बिल्ली जैसा गंदा जानवर धरती पर क्यों बनाया?' इस पर लक्ष्मी ने अपना सिर हिलाया जैसे वह रुक्मिणी की बात से सहमत हो। इस पर रुक्मिणी तेजी से हंस पड़ी, पर अगले ही क्षण सास का ख्याल उसके सामने कौंध गया और उसने सख्ती से अपना मुंह बंद कर लिया। उसकी हंसी उड़ चुकी थी। शाम होने वाली थी, तब पड़ोसी परिवार की महिलाएं आईं। उन्होंने दरवाजे पर आवाज लगाई, 'रुक्मिणी, क्या अब हम लोग चलें?' रुक्मिणी जल्दी से एक अच्छी साड़ी ढूंढ़ते हुए बोली, 'जरा एक मिनट, ठहरो'। जल्दी में हमेशा भ्रम पैदा हो जाता है। अपनी समझ के मुताबिक वह अच्छी साड़ी नहीं ढूंढ़ पाई। जिस साड़ी पर उसकी नजर पड़ी, वह उसने जल्दी से लपेट ली।

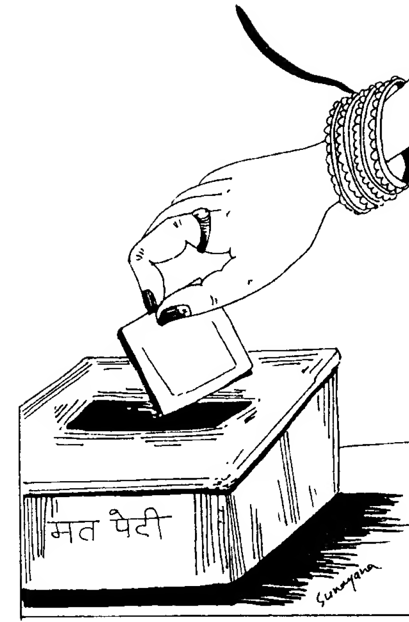


चलते समय रास्ते में दिखने वाली सभी चीजों का लक्ष्मी ने आनन्द लिया। उसने एक पेड़ पर बैठी चिड़ियों को देखा। चिड़ियां चहचहा रही थीं और इधर-उधर

उड़ रही थीं। उसके बाद वे फिर डाल पर लौट आती थीं। रुक्मिणी खुश चिड़ियों को देख कर खुद भी खुश हो रही थी। उसने जैसे चिड़ियों से कहा, 'प्यारी चिड़ियो! निश्चित रूप से मेरा वोट तुम्हारे लिए'। आखिरकार वह स्कूल पहुंच गई। उसने वहां देखा कि औरतों की लम्बी लाइन लगी है। आदमियों की लाइन भी लम्बी थी। वह महिलाओं की लाइन के आखिर में खड़ी हो गई। स्कूल में काफी पेड़ लगे थे, इसलिए उसे धूप नहीं लग रही थी।

चुनाव स्थल के भीतर कुछ लोग काम कर रहे थे। एक ने उससे नाम पूछा और दूसरे ने उसकी उंगली पर निशान लगाने वाली स्याही से एक निशान लगा दिया। एक और आदमी ने उसे मतपत्र दिया। रुक्मिणी को अजनबी लोगों, खासकर आदमियों, से बात करने में बेचैनी महसूस हो रही थी। अब वह घबरा गई थी। मतपत्र हाथ में लेकर वह पर्दे से घिरी जगह के भीतर गई। उसका दिल जैसे तोते के लिए धड़क रहा था। वह कह रहा था, 'तोता, तोता, तोता' पर तभी जैसे उसे सास की दबंग आवाज सुनाई दी, 'मैंने जो कहा, उसे याद रखो'। रुक्मिणी की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। वह मतपत्र को घूर रही थी, पर उसे वहां कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। उसने अपनी हिम्मत जुटाने की कोशिश की और मतपत्र को गौर से देखा। अब उसे तोते का निशान दिखाई दिया और उसकी मुहर तोते के पास पहुंची। अचानक चीजें बदल गईं। उसे लगा जैसे कोई उसका हाथ तोते से पीछे खींच रहा है। उसका अपना हाथ तोते की ओर निशान लगाने के लिए बढ़ रहा था, पर जैसे कोई दूसरा उसका हाथ पीछे खींच कर बिल्ली निशान की ओर धकेल रहा था। और लो! आखिरकार बिल्ली पर मुहर लग

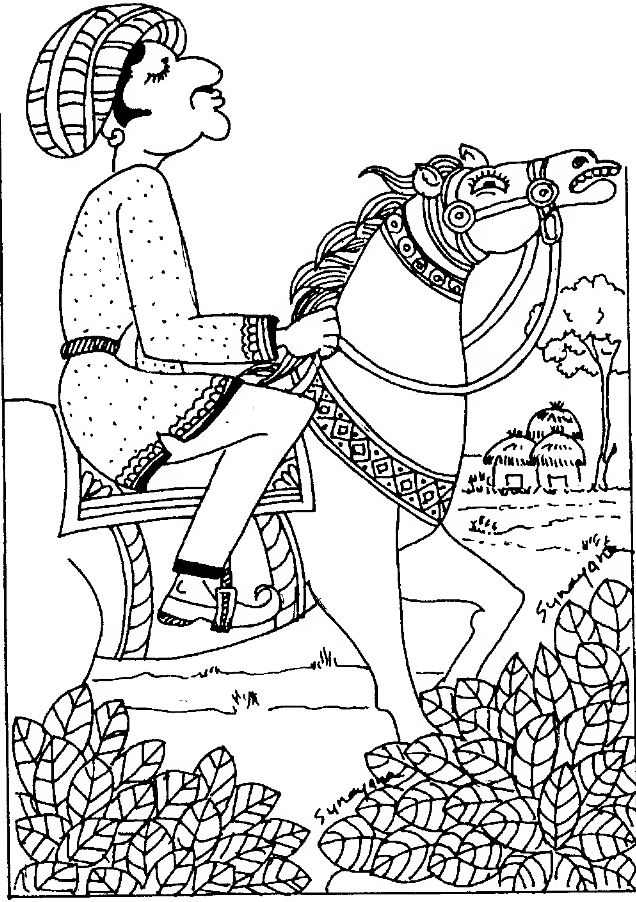




ही गई। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे! किसने उसका हाथ बिल्ली की ओर खींचा? और किसने? जिस क्षण रुक्मिणी के ख्याल में उसकी सास आ गई, उसी क्षण रुक्मिणी का हाथ अपने आप बिल्ली की ओर चला गया।

उसने मतपत्र बक्से में डाल दिया। वह अपना आपा खो बैठी थी। उसे तेजी से पसीना निकल रहा था। अपना सिर झुकाए वह तेजी से घर की ओर बढ़ी। वह किसी से नजरें नहीं मिला पा रही थी। जो कुछ हो गया था उसके बाद वह ऐसा कर भी कैसे सकती थी! चुनाव स्थल तक उसके साथ आने वाली औरतें आवाजें देती उसके पीछे भाग रही थीं, 'रुक्मिणी, ठहरो', 'रुक्मिणी, जरा रुको, हम भी आ रहे हैं'। वह इंतजार नहीं करना चाहती थी। वह जल्दी से जल्दी गौशाला पहुंच जाना चाहती थी। वहां रोकर वह अपने आंसू बहा देना चाहती थी। लड़कियों ने उससे पूछा, 'तुमने अपना वोट किसे दिया?' रुक्मिणी ने रूखेपन से जवाब दिया, 'अपनी सास को', और वह तेजी से चली गई।





लोमड़ी की गवाही

पुराने जमाने की बात है, एक गांव में एक व्यापारी रहता था। उसके पास एक घोड़ी थी। वह व्यापार करने के लिए अक्सर अपनी घोड़ी पर सवार हो कर एक जगह से दूसरी जगह आता-जाता रहता था। एक दिन व्यापारी हमेशा की तरह घोड़ी पर सवार हो कर काफी लम्बी यात्रा पर निकला। घोड़ी गर्भवती

थी। वह बेचारी बड़ी मुश्किल से चल-फिर पा रही थी। लम्बी यात्रा से वह बहुत थक भी गई थी। तभी व्यापारी ने सड़क किनारे तेल निकालने वाले एक कोल्हू को देखा। उस समय वहां कोई नहीं था और कोल्हू भी चल नहीं रहा था। व्यापारी घोड़ी से उतरा और उसे कोल्हू से बांध दिया। इसके बाद वह पास के गांव में चला गया। वहां उसने भरपेट खाना खाया तथा घोड़ी के लिए जरूरत भर का चना खरीद लिया। चना लेकर वह घोड़ी के पास लौटा। व्यापारी के वापस लौटने से पहले ही घोड़ी ने एक बहुत सुन्दर बछेड़े को जन्म दे दिया था। संयोग से उसी समय वहां कोल्हू का मालिक भी आ गया। उसने घोड़ी और बछेड़े को देखा। उसके मन में लालच आ गया और व्यापारी के लौटने से पहले ही वह बछेड़े को अपने घर उठा ले गया।

वापस आने पर व्यापारी को पता चला कि कोल्हू का मालिक बछेड़े को अपने साथ ले गया है। वह बछेड़े को मांगने उसके घर पहुंचा और कहा, 'कोल्हू के मालिक मेरा बछेड़ा मुझे दे दो'। कोल्हू का मालिक तेज आवाज में बोला, 'वह बछेड़ा मेरा है, उसे मैं तुम्हें नहीं दूंगा'। व्यापारी ने फिर प्रार्थना भरे स्वर में कहा, 'कोल्हू के मालिक, मेरी घोड़ी ने उस बछेड़े को जन्म दिया है। मेरा बछेड़ा मुझे दे दो।' पर कोल्हू का मालिक बछेड़ा वापस करने के लिए तैयार ही नहीं था। उसने कहा, 'नहीं यह मेरे कोल्हू

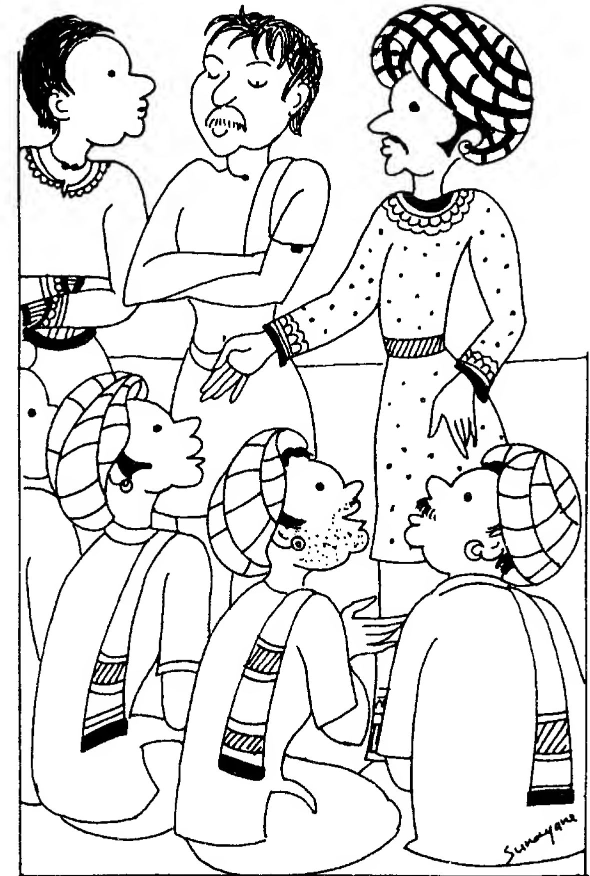




का बच्चा है, इसलिए मेरा है।' अब व्यापारी ने भी बड़े गुस्से से कहा, 'कोल्हू के भी कहीं बच्चे होते हैं, तुम मुझे बेवकूफ क्यों बना रहे हो?' इस पर व्यापारी और कोल्हू के मालिक के बीच तेज-तेज आवाज में बहस होने लगी। शोर सुन कर गांव वाले वहां आ गए और दोनों के बीच झगड़ा निबटाने के लिए पंचायत बुला ली गई।

पंचायत के सामने व्यापारी ने अपना दावा पेश करते हुए कहा, 'बछेड़ा मेरा है, क्योंकि मेरी घोड़ी ने उसे जन्म दिया है।' कोल्हू के मालिक ने कहा, 'नहीं मेरा कोल्हू बछेड़े का बाप है, वह मेरा है।' उसने यह बात बड़ी तेज आवाज में चिल्ला कर कही। गांव के बड़े- बूढ़े बड़े चक्कर में पड़ गए। वे समझ नहीं पा रहे थे कि इस झगड़े का निपटारा कैसे करें। वे काफी समय तक इस मामले पर सोचते रहे पर कोई नतीजा नहीं निकला। आखिरकार थक-हार कर उन्होंने कहा, 'कोल्हू के मालिक, मेरी बात सुनो। घोड़ी के मालिक, तुम भी मेरी बात सुनो। केवल तुम लोगों के बयान पर हम विश्वास नहीं कर सकते हैं, इसलिए गवाहों की बात सुननी होगी। तुम दोनों कल आओ और अपने-अपने गवाह लाओ। गवाहों की बात सुनने के बाद ही हम कोई फैसला कर सकेंगे। फैसला होने तक बछेड़ा हमारे पास रहेगा।' इस तरह उस दिन पंचायत की कार्यवाही समाप्त हुई। इस फैसले से कोल्हू का मालिक बहुत खुश हुआ। उसकी खुशी की कोई सीमा नहीं थी, पर व्यापारी बहुत दुखी था। बहुत परेशानी की हालत में वह वहां से चला गया।

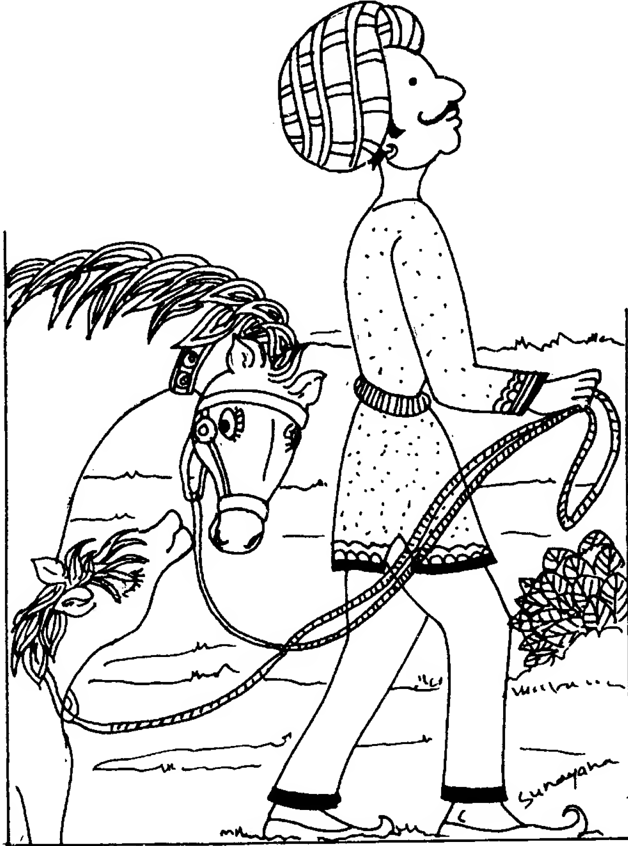
व्यापारी बेचारा जंगल में चला गया। उसने घोड़ी को घास चरने के लिए छोड़ दिया और खुद हथेली पर सिर टिका कर एक पेड़ की छाया में बैठ गया। वह सचमुच बहुत परेशान था और उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उसी समय वहां से एक लोमड़ी गुजरी। वह बहुत दयालु थी। लोमड़ी ने परेशानी में घिरे व्यापारी को देख कर उससे पूछा, 'व्यापारी, तुम इतने परेशान क्यों हो?' व्यापारी ने जवाब दिया, 'हे अच्छी लोमड़ी, मैंने अपनी घोड़ी को एक कोल्हू से बांध दिया। उसने एक बछेड़े को जन्म दिया। कोल्हू का मालिक बछेड़े को उठा ले गया। उसका दावा है कि बछेड़ा कोल्हू का बच्चा है। पंचायत ने दोनों से एक-एक गवाह लाने को कहा है। कोल्हू का मालिक यहीं का रहने वाला है। वह आसानी से एक गवाह ले आएगा। मैं बाहरी आदमी हूं। बताओ, अच्छी लोमड़ी मेरी गवाही कौन देगा? मैं गवाह कहां से लाऊं?' लोमड़ी ने व्यापारी को दिलासा देते हुए कहा, 'व्यापारी, तुम परेशान बिल्कुल न हो। मैं कल आऊंगी। कल मैं तुम्हारी गवाही दूंगी।'



अगले दिन जब पंचायत बैठी तो कोल्हू का मालिक एक झूठा गवाह ले आया। गांव वालों ने व्यापारी की ओर

देख कर पूछा, 'व्यापारी तुम्हारा गवाह कहां है?' व्यापारी ने जवाब दिया, 'लोमड़ी मेरी गवाह है।' इस पर सारे लोग हंस पड़े। उन्हें व्यापारी की बात मजाक लगी। उन्होंने आश्चर्य से पूछा, 'लोमड़ी? क्या वास्तव में लोमड़ी तुम्हारी गवाह है? अच्छा, वह कब आएगी?' व्यापारी ने जवाब दिया, 'वह बस आ ही रही होगी।' पर लोमड़ी नहीं आई। हर आदमी उसका इंतजार कर रहा था, पर वह नहीं आई।

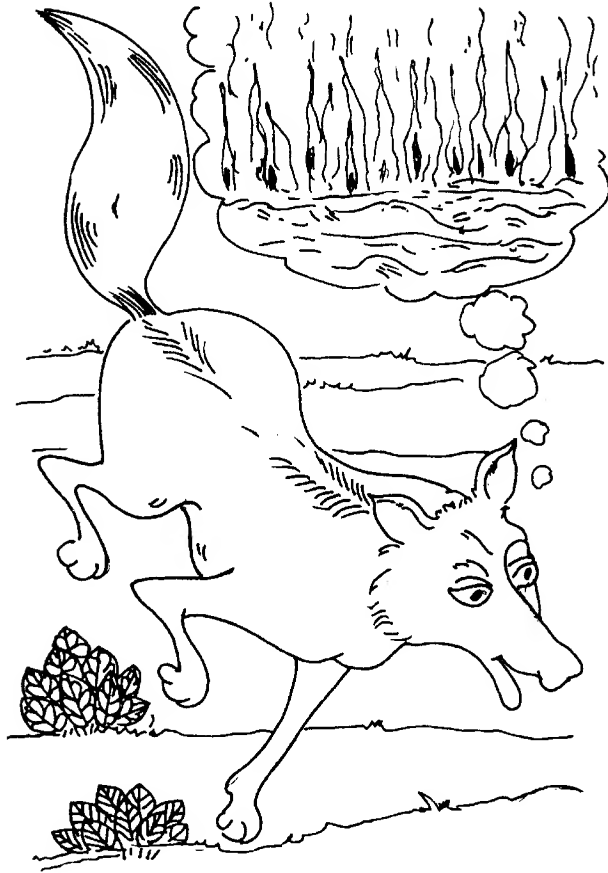
आखिरकार बड़े लम्बे इंतजार के बाद लोमड़ी आई। पर यह क्या? लोमड़ी तो बड़ी जोर-जोर से जम्हाइयां ले रही थी और ऐसे चल रही थी जैसे वह बड़ी गहरी नींद से किसी तरह उठ कर आई है। गांव के बड़े-बूढ़ों ने एक स्वर में लोमड़ी से पूछा, 'अरे लोमड़ी, तुम्हें इतनी देर क्यों हो गई? तुम इतनी नींद में



क्यों लग रही हो?' लोमड़ी ने आंखें झपकाते हुए बड़े-बूढ़ों को देखा और बोली, 'सम्मानित बुजुर्गो, कल रात समुद्र में आग लग गई। मैंने पयाल डाल-डाल कर आग बुझाई। आग बुझाने में मुझे सारी रात मेहनत करनी पड़ी। इसीलिए मैं देर से आई। रात भर मैं सो नहीं सकी। अब मुझे बहुत नींद लग रही है।' यह बोलते हुए भी लोमड़ी जम्हाइयां ले रही थी। जैसे ही लोमड़ी ने अपनी बात खत्म की कि सारे बूढ़े ऊंची आवाज में एक स्वर में चीखे, 'झूठ, झूठ। तुम कितना सफेद झूठ बोल रही हो।' लोमड़ी पर गुस्से से चिल्लाते हुए उन्होंने कहा, 'समुद्र में आग नहीं लग सकती। यह झूठ है। अगर मान भी लिया जाए कि समुद्र में आग लग गई तो वह पयाल से कैसे बुझ सकती है? तुम कितना बड़ा झूठ बोल रही हो।'

लोमड़ी पंचों के इस तरह गुस्साने से बिल्कुल नहीं डरी। वह अपनी बात पर डटी रही। उसने पंचों से पूछा, 'अगर समुद्र में आग नहीं लग सकती या उसे पयाल से बुझाया नहीं जा सकता तो बछेड़ा कोल्हू का बच्चा कैसे हो सकता है?' लोमड़ी के इस सवाल पर गांव के बड़े-बूढ़ों को कोई जवाब न सूझा और उन्होंने अपने सिर शर्म से झुका लिए। अब उन्होंने अपनी गलती समझ ली थी। वे सभी अच्छी तरह जानते थे कि कोल्हू के बच्चा नहीं हो सकता है, पर उन्होंने इस झूठे मामले पर पंचायत बुला ली थी। उन्होंने अपनी गलती मानते हुए व्यापारी को बछेड़ा वापस कर दिया। व्यापारी ने लोमड़ी को बार-बार धन्यवाद दिया और खुशी-खुशी अपने घर आ गया।





लोमड़ी के बारे में कुछ प्रचलित धारणाएं

श्रीविल्लीपुत्तूर के नव-साक्षरों सी.पलावनम् एवं के.बालअम्माल तथा सत्तूर के नव-साक्षर वी.मरियप्पन के अनुसार लोमड़ी के बारे में निम्नलिखित अंधविश्वास हैं :

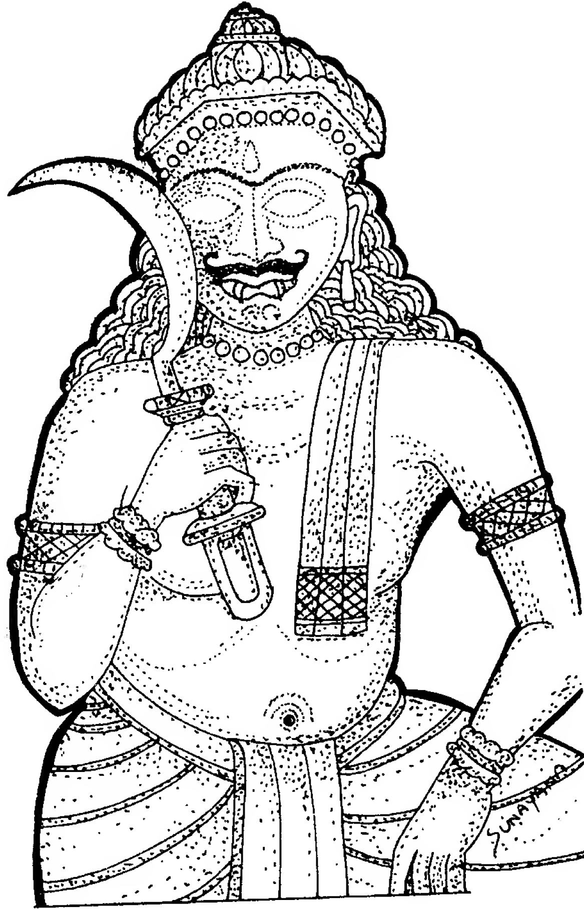
- लोमड़ी की आंखों में घूरना शुभ माना जाता है।
- माना जाता है कि लोमड़ी के पंजे और दांतों का तावीज बना कर पहनने से डर नहीं लगता।

लोमड़ी के बारे में कुछ वैज्ञानिक सूचनाएं

अरूप्पुकोट्टै के प्रोफेसर प्रभाकर जोसेफ के अनुसार लोमड़ी से संबंधित कुछ वैज्ञानिक जानकारियां निम्नलिखित है :

- दुनिया भर में लोमड़ियों पर अनेक लोककथाएं प्रचलित हैं। बच्चों की कहानियों में लोमड़ियों के चरित्र प्रमुखता से पाये जाते हैं।
- लोमड़ी के वर्णनों में उसकी चालाकी, चालबाजी और धोखेबाजी का जिक्र होता है। शायद ही किसी ने अच्छी लोमड़ी की बात सुनी हो।
- लोमड़ी स्तनधारी (मैमेलियन) समूह की जानवर है।
- लोमड़ी कुत्ता परिवार की सदस्य है।
- लोमड़ी रात और दिन, हर समय शिकार कर सकती है।
- लोमड़ी गड्ढे खोदती है और उन्हीं में रहती है।
- लोमड़ी खरगोश, चूहा, मेढक, चिड़िया, भेड़ और हिरन को खा लेती है। वह जीवित प्राणियों का शिकार करती है, पर जानवरों या आदमियों की लाशें भी खा लेती है। अक्सर उसे कब्रिस्तान के आस-पास पाया जा सकता है।
- लोमड़ी में सूंघने की बहुत जबर्दस्त शक्ति होती है। उसकी सुनने की शक्ति भी बहुत अधिक होती है।
- लोमड़ी बहुत सावधानी और धैर्य से अपना शिकार करती है। शिकार करने के लिए यह बड़ी अच्छी योजना बनाती है।
- लोमड़ी के शरीर पर घने बाल होते हैं। इसकी पूंछ घनी झाड़ी की तरह और बहुत सुन्दर होती है।
- जब मनुष्य जंगलों में रहते थे तो कुत्ते उनके नजदीक आये और पालतू बन गए, पर लोमड़ी ने कभी मनुष्यों का साथ पसंद नहीं किया।





भयंकर बरसात

अय्यनार बहुत ताकतवर देवता है। वह हाथीपट्टी गांव की रक्षा में लगा रहता है। पर इसका कोई मन्दिर नहीं है। गांव के बाहर एक तालाब के बंधे पर वह खड़ा रहता है। खुले मैदान में धूप और बरसात झेलते अय्यनार मौसम की दया पर निर्भर रहता है। वैसे भी वह उन लोगों का देवता है जो खुद झोपड़ियों में रहते हैं। ऐसे में भला उसे मंदिर और बढ़िया प्रसाद कहां से मिले? इसके

बावजूद हाथ में हंसिया लिये जैसे वह गांव वालों की रक्षा में तैनात रहता। वह बहुत लम्बा था। उसकी लम्बाई ताड़ के पेड़ की आधी है। वह बहुत डरावना लगता था। उसकी शक्ल-सूरत किसी को भी डरा सकती थी।

बच्चे उसके आसपास खेलने जाने से भी डरते थे। बंधे के किनारे गणेश का एक मन्दिर था। बच्चे इस मन्दिर तक ही खेलने जाते थे। लोगों का कहना है कि रात में अय्यनार के आस-पास से चीखें सुनाई देती थीं। ये चीखें इस तरह होतीं जैसे कोई प्रार्थना कर रहा हो, 'नहीं, मुझे छोड़ दो, मुझे मत पकड़ो, मुझे जाने दो स्वामी, ...' कहा जाता है कि रात समाप्त होने के समय आत्माएं आसमान से जमीन पर आती हैं। आसमान से हाथीपट्टी जाने के रास्ते में उन्हें अय्यनार के पास से होकर गुजरना पड़ता था, पर अय्यनार उनको कभी जाने नहीं देता था। वह उनके रास्ते में मजबूती से खड़ा हो जाता था। इस प्रकार अय्यनार सचमुच गांव का रक्षक देवता था।



वह सभी भूत-प्रेतों, आत्माओं के बाल पकड़ लेता और उनको घसीट कर बंधे के पास खड़े इकलौते ताड़ के पेड़ से बांध देता। पूरी रात इन कैदी भूतों के चीखने

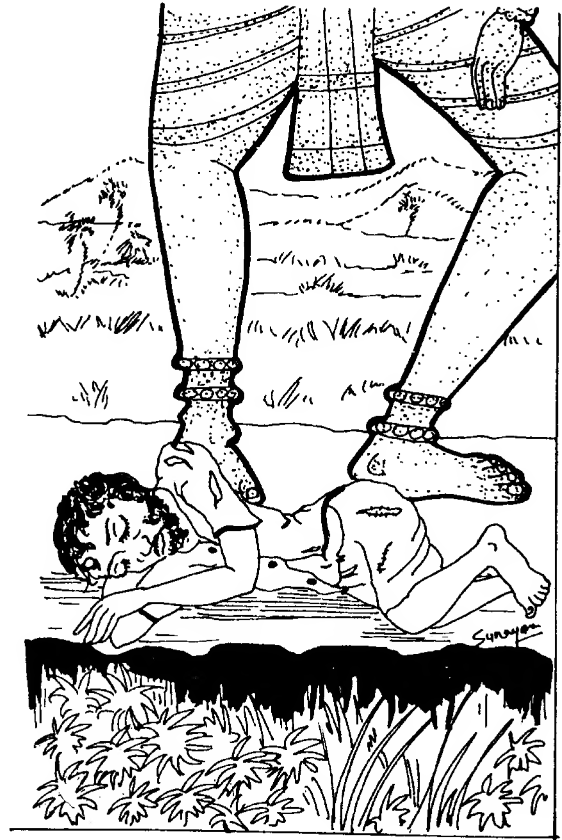


चिल्लाने की आवाजें आती रहतीं। पूर्णिमा की रात भूतों की संख्या ज्यादा होती थी। चाहे जो कुछ हो, अय्यनार एक भी भूत को बच कर गांव में प्रवेश नहीं करने देता था। गांव वालों को उसके कारण बड़ी हिम्मत मिलती थी। खेतों में काम समाप्त कर औरतें जल्दी-जल्दी गांव लौटतीं। अगर उनको थोड़ी देर हो जाती तो भी वे डरती नहीं थीं।

गांव की जिन्दगी खेती पर निर्भर थी। अगर तालाब में पानी होता तो गांव वाले फसलें उगाते। किसी साल यदि पानी नहीं बरसता तो तालाब भी सूखा रहता। सितम्बर में फसल काटने पर वे उत्सव मनाते तथा अय्यनार को प्रसाद चढ़ाते। इस समय बाजे बजते, गाने गाए जाते, भेड़ों की बलि दी जाती और दावतें होतीं। उत्सव के समय लोगों को अय्यनार का बहुत ध्यान रहता। उत्सव के पहले मदुरै से लोग बुलाए जाते जो अय्यनार पर नया रंग चढ़ाते। अय्यनार के सिर तक पहुंचने के लिए वे उसके चारों ओर मचान बनाते थे। उत्सव के दिन अय्यनार नये रंग से चमक उठता और बहुत शानदार लगता। तीन दिन तक चलने वाले इस उत्सव में कठपुतली, नाच तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

किया जाता था।

इस बार उत्सव नहीं हुआ। पिछले तीन साल से फसलें बरबाद हो रही थीं, अतः अय्यनार का भी रंग-रोगन नहीं हुआ। धूप में तपता अय्यनार अब बड़ा दयनीय लगता था। गांव में शादी होने पर दूल्हा-दूल्हन अय्यनार के पैर छूकर उसका आर्शीवाद लेते और उसके पैरों में नारियल फोड़ते थे। बच्चे दौड़ जाते, नारियल के टुकड़ों को उठा लाते और खा लेते। बेचारे अय्यनार के लिए एक टुकड़ा भी नहीं बचता। तीन सालों से अय्यनार को कोई न प्रणाम करने जाता था, न प्रसाद चढ़ाने। लोग आपस में कानाफूसी करते कि अय्यनार इस पर दुखी और गुस्सा था। यह देवता पहले ही अपनी प्रकृति से गुस्सावर था। अब अपने तिरस्कार से उसका गुस्सा और बढ़ गया था। लोग अय्यनार की ओर हल्के से देखने से भी डरते थे। अपने अपराध-बोध के कारण वे अब दिन में भी उसके पास नहीं जाते थे।



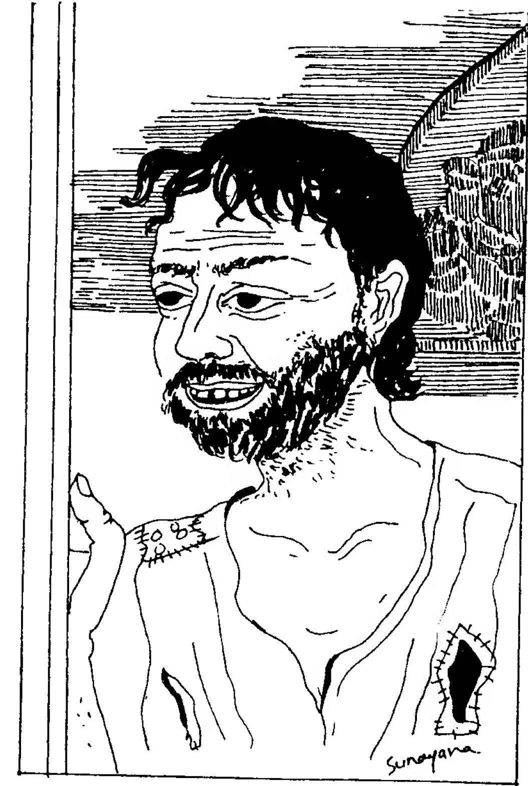
इसी समय गांव में एक अजनबी आदमी आया। सबसे पहले उसे अय्यनार की मूर्ति के नीचे सोता पाया गया। हमेशा की तरह उसे सबसे पहले बच्चों ने देखा। वे गांव की ओर भाग कर गए और बड़े लोगों को यह समाचार बताया।

बड़े लोग उसके पास गए। उन्होंने उसे जगा कर पूछा, 'तुम कौन हो? तुम कहां से आए हो?' ये सवाल बड़ी नम्रता से पूछे गए थे, पर अजनबी ने उन्हें बस घूर कर देखा। उसके पास कोई सामान या बर्तन नहीं था। आमतौर से भिखारियों के पास इस तरह की चीजें होती हैं। उसके घूरने के तरीके से गांव वालों में हमदर्दी पैदा हुई। उन्होंने फिर पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है?' इस पर अजनबी के मुंह से हंसी की अजीब-सी आवाज निकली, 'ही...ई...ई....ई..'। देखने से लगता था जैसे उसने दो-तीन दिनों से खाना नहीं खाया था। एक बूढ़ी औरत ने पूछा, 'क्या तुम कुछ खाओगे?' इसके जवाब में भी हंसी जैसी 'ही...ई...ई....ई..' की आवाज आई। आप उससे चाहे जो पूछते, जवाब में वही 'ही...ई...ई....ई..'।

लोगों ने उसे पागल समझा और गांव ले आए। गांव में आने पर भी वही 'ही. ई...ई....ई..' सुनाई दी। पंचायत घर में उसे लोगों ने पेट भर खिलाया। लोगों ने सोचा, बेचारा किसी गरीब मां का बेटा है। दो-तीन कौर खाने के बाद उसके मुंह से फिर वही आवाज निकली 'ही...ई...ई....ई..'। इसके बाद उसने दो-तीन कौर और खाये, और बस। वह खाना खा चुका था। लोगों ने उसे समझाया, 'तुम यहीं पंचायत घर में सोओ, अय्यनार के पास भी मत जाना।' जवाब में फिर वही 'ही...ई...ई....ई..'। इसके बाद वह उठ पड़ा और भागता हुआ जाकर अय्यनार की मूर्ति के नीचे लेट गया। कुछ लोग उसके पीछे गए और उसे घसीट कर फिर पंचायत घर में ले आए। इसके बाद वह चुपचाप वहीं पड़ा रहा। अगले सवेरे जब वह वहां नहीं दिखाई दिया तो गांव वालों ने सोचा कि शायद वह गांव छोड़ कर चला गया हो, पर बाद में उसे फिर अय्यनार की मूर्ति के नीचे बैठे देखा गया।



भूखा होने पर वह गांव में आ जाता। वह किसी से कुछ नहीं कहता था। शायद सोचता हो कि इस धरती पर उसे किसी से बात करने की जरूरत नहीं है। वह एक शब्द भी नहीं बोलता था। वह किसी के दरवाजे पर जाकर बैठ जाता। परिवार के लोग उसे कुछ चावल या दलिया दे देते। वह अपने साथ कटोरा या प्लेट कभी नहीं रखता था। गांव वाले उसे खुद ही प्लेट में चावल देते। वह चुपचाप बैठ कर खा लेता और फिर वही आवाज करता 'ही...ई...ई....ई..'। वे बूढ़े जिनके बच्चे उनकी चिन्ता नहीं करते थे, पगले को देख कर ईर्ष्या से कहते, 'तुम्हारी क्या किस्मत है! तुम्हारा शाही स्वागत होता है और एक हम हैं जिन्हें कोई मुट्ठी भर चावल के लिए भी नहीं पूछता।' पगला इसपर भी हंस देता, 'ही...ई...ई....ई..'। वे हमेशा अय्यनार के पास पड़ा रहता। अब गांव के लोग उसे पसन्द करने लगे थे। उसके प्रति उनके मन में थोड़ा सम्मान भी पैदा हो गया था। दिन बीतने के साथ लोग धीरे-धीरे उसे अय्यनारप्पन् कहने लगे थे।



दिन इसी तरह बीत रहे थे कि अचानक एक शाम बादल घिर आए। आसमान में भयानक अंधेरा छा गया और ठंडी हवा चलने लगी। हर आदमी खुशी से भर गया, 'ओह! लगता है, बरसात आ रही है'। थोड़ी ही देर में हवा



एक जबर्दस्त तूफान में बदल गई। पंचायत घर के पास लगा नीम का पेड़ जड़ से उखड़ गया। तूफान बहुत तेज था। घरों की छतें उड़ गईं तथा गरज-चमक के बीच तेज बरसात शुरू हो गई। लोगों ने खुद को घरों के अन्दर बंद कर लिया। कोई भी सो नहीं सका। वे सो भी कैसे सकते थे! तेज तूफान जैसे सारी चीजें नष्ट करने पर तुला था। लोग बहुत डरे थे। बरसात इतनी तेज थी कि वह पूरे गांव को बहा सकती थी। डर के मारे लोग अय्यनार की प्रार्थना करने लगे, 'अय्यनारप्पा...अय्यनारप्पा....मेहरबानी करके अपना गुस्सा शान्त करो। हम आपके बच्चे हैं....अय्यनारप्पा प्रसन्न हो.....शान्त हो जाओ'।

अय्यनार ने उनको धोखा नहीं दिया। सवेरे तक बरसात और तूफान शान्त हो गया। सूरज चमकने लगा। लोग अपने घरों से बाहर निकले। बहुत से पेड़ उखड़ गये और तमाम घरों की छतें भी उड़ गइं थीं। पर एक चीज अच्छी दिखाई दी, तालाब पानी से लबालब भर गया था। पूरा गांव तालाब के बंधे पर पहुंच गया। सभी लोग बहुत खुश थे। अचानक किसी ने कहा, 'पगले का क्या हुआ? वह कहां है?' सभी अय्यनार की ओर भागे। अय्यनार की टूटी हुई मूर्ति मुंह के बल जमीन पर पड़ी थी। वह चकनाचूर हो गई थी और उसके टुकड़े चारों ओर बिखरे थे। हर आदमी को इससे बड़ा झटका लगा। उनके मुंह से चीख निकल पड़ी, 'अय्यनार....'

उन्होंने टूटे टुकड़ों के बीच पगले को तलाश किया। उन्होंने सोचा कि पगला शायद मूर्ति के नीचे दब गया। उन्हें चिन्ता हो गई, 'क्या वह सुरक्षित है?' पगला उनको नहीं मिला। हर आदमी उसके बारे में सोच कर डर गया। उनके दिमाग में अनेक चीजें आ रही थीं। कहीं वह मर तो नहीं गया? कहीं तेज बरसात उसे बहा तो नहीं ले गई? वे पगले के बारे में दुखी होने लगे, 'अब हम क्या करें? बेचारा किसी भली औरत का बेटा! पता नहीं वह कहां बह गया?' अचानक उन्हें अपनी सुपरिचित आवाज सुनाई दी, 'ही...ई...ई....ई..'। हर आदमी ने आवाज की ओर सिर घुमाया। उन्होंने देखा कि पगला गणेश मन्दिर से निकल रहा था। उसके ऊपर एक भी बूंद पानी नहीं पड़ा था।

उसे देख कर लोग खुश हो गए। उन्होंने कहा, 'ओह, यह बात है! चाहे जो कुछ हो, है तो वह आखिरकार एक आदमी ही। हर जीवित आदमी अपनी सुरक्षा करना जानता है। है, न!' अब लोगों के हंसने की बारी थी। उन्होंने राहत की सांस ली, वे खुशी से भर गए थे। हर आदमी को हंसता देख कर पगला भी हंस पड़ा, 'ही...ई...ई....ई..'। इस बार उसकी आवाज काफी तेज थी। अय्यनार की टूटी हुई मूर्ति जमीन पर पड़ी थी। वह न हंस सकती थी, न मुस्करा सकती थी।





कन्नगी की कहानी

मदुरै तमिलनाडु में बहुत सुन्दर जगह है। यह बहुत प्राचीन शहर है। हम इस शहर को बहुत पसन्द करते हैं। वेगै नदी मदुरै से हो कर बहती है। यहीं अत्यन्त प्रसिद्ध मीनाक्षी मंदिर है। तिरुमलै नायकर द्वारा बनवाया महल भी मदुरै में है। इसके पास ही तिरुप्परनकुम्म है। पास ही में अजगरकोविल पहाड़ियां भी हैं। मदुरै कितना सुन्दर शहर है! पर कहा जाता है कि दो हजार साल पहले कन्नगी ने मदुरै को जला दिया था।

कन्नगी मदुरै पर क्यों गुस्सा थी? उसे इतनी जल्दी गुस्सा क्यों आता था? नहीं, वह बहुत सरल थी, बहुत सभ्य।

कन्नगी पूम्पुहर के एक धनी परिवार में पैदा हुई थी। उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला गया था। कन्नगी बहुत सुन्दर थी, पर उसे दुनियादारी का ज्यादा ज्ञान नहीं था। कन्नगी के विवाह पर बहुत शानदार और यादगार समारोह हुआ। इससे

पूरे शहर का मुंह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया। उसका पति कोवलन भी बहुत अमीर था। विवाह के समय कन्नगी की आयु केवल 12 वर्ष थी, जबकि उसका पति कोवलन 16 वर्ष का था। कन्नगी और कोवलन अपना जीवन सुख से बिता रहे थे।

जब पैसा बढ़ता है तो उसका कुछ हिस्सा घर से बाहर चला जाता है। अमीर लोग इधर-उधर घूमना शुरू कर देते हैं। वे सुन्दरता देख कर अंधे हो जाते हैं और अपनी पत्नियों के गुणों को भूल जाते हैं। कोवलन भी ऐसे ही आकर्षणों का शिकार हो गया। एक दिन वह कन्नगी को छोड़ कर माधवी के पीछे चल दिया। यह माधवी कौन थी? वह नाचने वाली लड़की थी। वह बहुत ही अच्छा नृत्य करती थी। उन दिनों ऐसी लड़कियों को समाज का एक अलग वर्ग समझा जाता था और अमीर आदमी उनको अपने 'स्वामित्व' में रख सकते थे। यह कितनी शर्मनाक बात है!



एक बार चोल राजा माधवी के नाच-गाने पर बहुत प्रसन्न हुए। इनाम के तौर पर राजा ने उसे सोने की एक जंजीर दी। उस समय की यह प्रचलित परम्परा थी कि जो व्यक्ति इस जंजीर को सबसे ज्यादा मूल्य में खरीदता वह माधवी का 'स्वामी' हो सकता था। यह नीलामी आम रास्ते या खुले मैदान में की जाती थी। एक कुबड़ी औरत माधवी की जंजीर लेकर सड़क पर आई। फौरन अमीर परिवारों के युवकों का ध्यान उसकी



ओर गया। औरत ने इन युवकों के साथ जंजीर का अच्छा मोल-भाव किया और आखिर में उसे बेच दिया। कोवलन ने वह जंजीर खरीद ली जो राजा ने माधवी को दी थी। इस तरह माधवी कोवलन की हो गई। माधवी अच्छी लड़की थी। वह कोवलन को प्यार करती थी। वह कोवलन के प्रति इतनी वफादार थी कि उसके अलावा वह किसी दूसरे आदमी के बारे में सोचती भी नहीं थी। कोवलन और माधवी खुशी-खुशी रह रहे थे। कोवलन माधवी के घर में रहता था।

कन्नगी ऐसे में अकेली रह गई। वह पूरे समय रोती रहती थी। उसे अपार दुख था। उसने अपने बालों में तेल लगाना भी छोड़ दिया था। इसके पहले उसने कभी अपने बालों को इस तरह नहीं छोड़ा था। उसने अपने को सजाना-संवारना बन्द कर हमेशा घर में बंद रहने लगी। वह घर के बाहर बिल्कुल नहीं निकली। जीवन कभी भी हमेशा एक जैसा नहीं रह सकता। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। कोवलन अपने व्यापार पर ध्यान नहीं दे रहा था और वह हर समय लापरवाही से अनाप-शनाप खर्च भी कर रहा था। इस प्रकार उसका सारा पैसा उड़ गया। वह माधवी से भी दुखी रहने लगा। क्या यह केवल दुखी रहना था? नहीं, वह उस पर शक भी करने लगा था।

उस समय इन्द्र महोत्सव के नाम से एक बहुत बड़ा उत्सव हुआ करता था। यह इतना बड़ा उत्सव होता था कि पूरा शहर ही उस समय जीवन्त हो उठता था। संगीत और नृत्य इस उत्सव का जरूरी हिस्सा था। माधवी के नृत्य के बिना कोई इन्द्र महोत्सव पूरा नहीं होता था। उस समय जैसे पूरी दुनिया उसके नृत्य की तारीफ में जुट जाती थी। माधवी पूरी तरह से कोवलन की थी। दूसरों को खुश करने के लिए माधवी के नृत्य को कोवलन पसंद नहीं करता था। वह ईर्ष्यालु हो जाता था। हम जानते हैं कि ईर्ष्या आदमी को भीतर ही भीतर जलाती रहती है। संदेह ने कोवलन को पूरी तरह अपने कब्जे में ले लिया था।

भीतर ही भीतर जलने वाली यह आग उसे खाए जा रही थी। ज्यादा दिनों तक इसका भीतर छिपे रहना संभव नहीं था। एक दिन यह फूट कर बाहर आ गई। एक दिन माधवी और कोवलन समुद्र तट पर गए। कोवलन ने वहां कुछ प्रेम गीत गाए। इसके उत्तर में माधवी ने भी कुछ प्रेम गीत गाए, पर ईर्ष्यालु कोवलन को इससे कोई खुशी नहीं हुई। गुस्से से भर कर वह कह उठा, 'तुम किसी और को ध्यान में रख कर गा रही हो।' कोवलन बहुत गुस्सा था। उसने कह दिया, 'आखिरकार तुम नाचने वाली लड़की हो। तुम उन्हीं की तरह होगी। उनसे अलग कैसे हो सकती हो'। कोई बिल्कुल बेवकूफ गधा ही शायद इसे न समझ पाता। माधवी के मन को इससे बहुत चोट लगी। वह रोने लगी। कोवलन को इसकी चिन्ता नहीं थी। दुखी माधवी को उसके हाल पर छोड़



कर कोवलन चला गया। अब वह उससे बहुत दूर जा चुका था।

कोवलन कन्नगी के पास वापस लौटा। उसने कन्नगी से सहानुभूति के कोई शब्द नहीं कहे। वह कह भी नहीं सकता था। वह बहुत दुखी था। वह केवल अपनी समाप्त हो चुकी संपत्ति के बारे में सोच रहा था। हमेशा विलाप करते हुए वह कहता, 'मेरी सारी संपत्ति समाप्त हो गई। हाय! हाय! अब मैं क्या करूं?' कन्नगी गुस्सा नहीं थी। वास्तव में अब उसे कोवलन पर दया आ रही थी। वह इतना टूट चुका था कि दया करने के अलावा वह और कुछ सोच भी नहीं सकती थी।

उन दिनों अमीर परिवार की महिलाएं पैरों में कड़े पहनती थीं। कन्नगी के पास दो कड़े किसी तरह बच गये थे। ये सोने के बने थे और इनके भीतर लाल मणि भरे थे। इनकी भारी कीमत थी। कन्नगी ने कोवलन को सांत्वना देते हुए कहा, 'इस तरह दुखी मत हो। मेरे पास दो बेशकीमती कड़े हैं। हम इन्हें बेच सकते हैं। इनको बेच कर हमारा जीवन चल जाएगा।' कन्नगी के मुंह से ये शब्द निकलते ही कोवलन ने उसकी बात मान ली। उसने तर्क देते हुए कहा, 'अब हमें इस जगह पर अधिक समय नहीं रहना चाहिए। मेरा सारा यश समाप्त हो गया है। बदनाम होकर मैं यहां कैसे रह सकता हूं! हमें मदुरै चले जाना चाहिए। हम वहां कड़े बेच कर अपनी रोजी-रोटी का इंतजाम करेंगे। हमें आज रात ही चल देना



चाहिए। तैयार हो जाओ। हमें चल देना चाहिए।' उसने कन्नगी से यह नहीं पूछा कि क्या किया जाना चाहिए या इसके अलावा क्या किया जा सकता है। उसने कन्नगी की राय नहीं ली। उसने कन्नगी से किसी योजना पर कोई बात नहीं की। उसने बस उससे तुरन्त चल देने को कह दिया। कन्नगी के भीतर उससे सवाल पूछने की आदत ही नहीं थी। वह खुश थी कि पति उसके पास वापस लौट आया है। अब वे मदुरै जाकर शांति से रहेंगे। वह मदुरै में सुखी जीवन का सपना देखने लगी।



कन्नगी और कोवलन आधी रात के बाद सन्नाटे में चल पड़े। उन्होंने किसी से जाने की बात नहीं बताई। इसलिए कोई भी उनकी इस यात्रा के बारे में नहीं जानता था। आजकल हर जगह बसें चलती हैं। उन दिनों कोई बस नहीं थी। अच्छी सड़कें भी नहीं थीं। उनको पैदल जाना था और वह भी जंगल में होकर। रास्ता पत्थरों और कांटों से भरा था। रास्ते में भालू भी मिल सकते थे और सांप-बिच्छुओं का भी डर था। इससे भी ज्यादा भयानक डकैतों का खतरा था। इन खतरों से बचने का कोई रास्ता नहीं था। अगर आपको यात्रा करनी होती तो ये सारे खतरे भी उठाने पड़ते। कन्नगी और कोवलन पैदल यात्रा करते हुए मदुरै की ओर चले। कन्नगी को इतनी लम्बी और कठोर यात्रा की आदत नहीं थी। उसके पैर सूज गए और वह बुरी तरह थक गई। इसके बावजूद उसका निश्चय

तथा आत्मविश्वास बना रहा। वह कोवलन का हाथ पकड़े चलती रही।

मदुरै पहुंचने तक कोवलन बिल्कुल बदल गया था। उसे ढुलमुलपन से मुक्ति मिल गई थी। उसके दिमाग में भी अब अनिश्चय नहीं था। उसका दिल जैसे धुल कर स्वच्छ हो गया था। कन्नगी को देखकर वह आश्चर्य से भर जाता था। वह सोचता, बिना कोई सवाल पूछे यह औरत मेरी कितनी आज्ञा मानती है। कन्नगी को प्रशंसात्मक नजरों से देखते हुए उसने कहा, 'मैंने बस इतना कहा कि हमें मदुरै चलना है, और अगले क्षण तुम चल पड़ी। कितनी उदार हो तुम!' कन्नगी से यह कहते हुए उसकी आंखों में आंसू आ गए। माधवी के प्रति भी उसका गुस्सा अब समाप्त हो चुका था। अब वह चीजों को अलग नजरिए से देख सकता था। बेचारी माधवी! वह भी एक मासूम लड़की थी। मैंने उसे भी अकारण दुख पहुंचाया। कोवलन को अब माधवी से किए अपने व्यवहार पर दुख हो रहा था। वैसे कोवलन अच्छा आदमी था। कष्ट सह कर भी वह दूसरों की मदद करने को तैयार रहता था। बस वह थोड़ा जल्दबाज था और बड़ी जल्दी में फैसला कर लेता था। इससे वह खुद मुसीबत में पड़ता था और अपने साथ के लोगों को भी तकलीफों में डाल देता था।

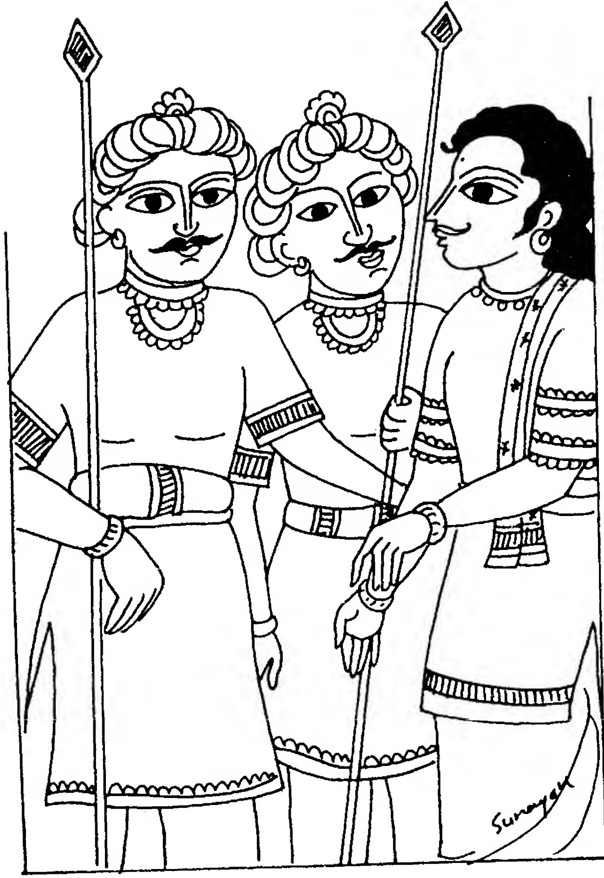
बहुत लम्बी यात्रा के बाद वे मदुरै के पास पहुंच गए। मदुरै अब दिखाई पड़ रहा था। वहां एक विशाल किला था और किले पर लगा झंडा भी उन्हें दिखाई दे रहा था। उनके कुछ रिश्तेदार मदुरै में रहते थे। वे सभी बहुत अमीर थे। कोवलन ने उनके यहां जाना ठीक नहीं समझा। मदुरै के बाहर अयारपडी नाम की जगह थी। यहां ग्वाले रहते थे। वे गायों को पालते थे। यहां एक बूढ़ी औरत रहती थी। वह बहुत अच्छी थी। कोवलन और कन्नगी उसके साथ ठहर गए। बूढ़ी औरत ने उन्हें अनाज तथा खाना पकाने का और सारा सामान दिया। बहुत लम्बे समय के बाद कन्नगी ने खाना बनाया और अपने पति को परोसा।

अगले दिन सवेरे कोवलन एक कड़ा अपने साथ लेकर बाहर निकल गया। वह शहर गया। रास्ते में उसे एक सुनार मिला। वह कोई मामूली सुनार नहीं था। वह राजा के लिए काम करता था। उसने रानी के जेवर बनाये थे, पर वह अच्छा आदमी नहीं था। वह धोखेबाज था। उसने रानी का एक कड़ा चुरा लिया था और



अब अपनी गर्दन बचाने का रास्ता तलाश कर रहा था। कोवलन ने इस आदमी से बात की। कोवलन लोगों पर बड़ी जल्दी विश्वास कर लेता था। वह बहुत सीधा और सरल आदमी था। यदि तुम्हें कोई सौदा करना हो, तो तुम्हें कई लोगों से इसके बारे में बात करनी चाहिए। तुम्हें जल्दी से सौदा नहीं कर लेना चाहिए।

कोवलन ने जल्दी से सौदा कर लिया। उसने दरबारी सुनार से मोलभाव किया और उसे कड़ा दिखा दिया। सुनार ने बड़ी अच्छी तरह बात की। उसने मन में बड़ी चालाकी से सोचा, 'यह कड़ा रानी के लिए ठीक है'। उसने कोवलन



से कहा, 'मैं तुम्हें इसका अच्छा दाम दूंगा। मेरे वापस आने तक तुम यही ठहरो।' इतना कह कर सुनार चला गया। कोवलन एक मंदिर के पास सुनार का इंतजार कर रहा था। सुनार सीधा राजा के पास गया। वह कोवलन पर चोरी का झूठा आरोप लगा कर उसे फंसाना चाहता था।

बेईमान सुनार राजा के दरबार में पहुंचा। पांड्य राजा और उनकी रानी उस समय एक नृत्य का आनन्द ले रहे थे। राजा युवा नर्तकी की नृत्य मुद्राओं में पूरी तरह डूबा हुआ था। इससे रानी को बड़ी ईर्ष्या हुई। वह बहुत गुस्सा हुई। सिर

दर्द का बहाना बना कर वह बीच में ही कार्यक्रम छोड़ कर चली गई। हम जानते हैं कि रानी क्यों ईर्ष्या और गुस्से से भर गई थी। राजा भी रानी के अचानक चले जाने की वजह का अनुमान लगा सकता था। उसे चिन्ता हुई कि रानी को कैसे खुश किया जाए। इस नाजुक समय पर सुनार वहां पहुंचा। सुनार ने घोषणा की कि जिस चोर ने रानी का कड़ा चुराया था, उसे पकड़ लिया गया है। इसपर राजा ने फौरन आदेश दे दिया, 'चोर को फांसी दे दो और कड़ा यहां ले आओ।' राजा ने अपने आदेश पर दोबारा सोचा भी नहीं। अपराधी को सुनवाई का मौका देने के बारे में भी उसने नहीं सोचा।

राजा के सिपाही कोवलन को फांसी देने पहुंच गए। सुनार भी उनके साथ था। सिपाही कोवलन को देख कर ठिठक गए। वह चोर जैसा बिल्कुल नहीं लगता था। उन्होंने कहा, 'यह आदमी? यह आदमी चोर जैसा नहीं लगता है।' वे कोवलन को फांसी नहीं देना चाहते थे, पर चालाक सुनार ने उन्हें भ्रम में डाल दिया और उनके दिमाग को बदल दिया। उसने कहा, 'यह कौन कह सकता है कि किस बिल में सांप है?' (मतलब यह नहीं कहा जा सकता कि कौन आदमी चोर है) यह कह कर उसने सिपाहियों को और भ्रमित कर दिया। राजा के सिपाहियों में एक निरक्षर था। इसके साथ ही वह शराब भी पिये था। वह जल्दबाज भी था। जब तक दूसरे सिपाही कुछ सोचें, तब तक उसने अपनी तलवार निकाली और एक झटके में कोवलन का सिर काट डाला। कोवलन का सिर जमीन पर लोटने लगा। सिपाहियों ने कोवलन का कड़ा अपने कब्जे में किया और दरबार पहुंचे। सुनार की योजना बड़ी सफाई से पूरी हो गई थी। अब उसकी चोरी मारे गए कोवलन के सिर थी। कोवलन की अन्यायपूर्वक हत्या कर दी गई थी। (मदुरै में पजंगनाथम् नामक एक क्षेत्र है। परम्परा के अनुसार विश्वास किया जाता है कि कोवलन की हत्या यहीं हुई थी।)

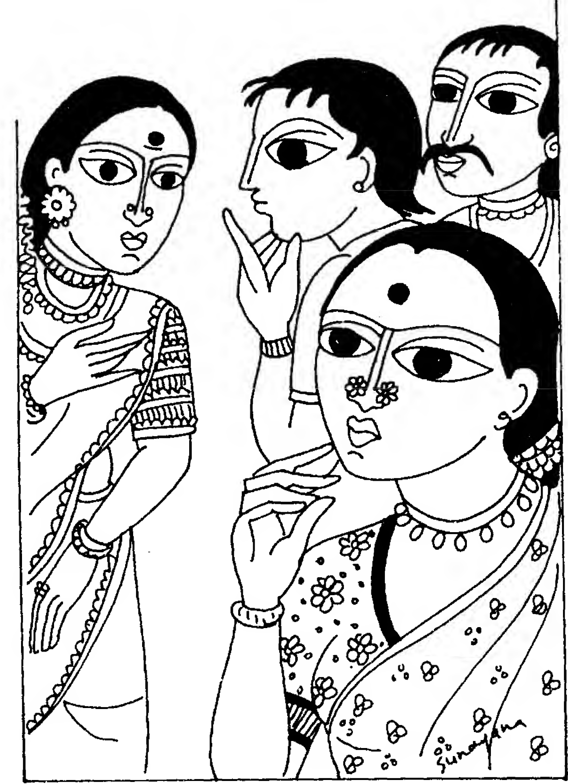
यहां कोवलन की सिर कटी लाश पड़ी थी और वहां कन्नगी बूढ़ी औरत के घर में बेचैन हो रही थी। सवेरे घर से गया कोवलन अभी वापस नहीं आया था। कन्नगी परेशान हो रही थी। वह सोच रही थी कि यह नई जगह है, क्या हुआ होगा? उसे इतनी देर क्यों हो रही है? उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही थी।

उसके मन में बुरे-बुरे ख्याल आ रहे थे। अयारपडी में उस समय तमाम अपशकुन होने लगे। उस समय दूध से दही नहीं जम रहा था। गाय-बैलों की आंखों से आंसू बह रहे थे। बछड़े अचानक शांत हो गए थे। वे कूद-फांद नहीं रहे थे और बहुत थके-थके लग रहे थे। गायों को कंपकपी उठ रही थी। गाय-बैलों के गले में बंधी घंटियों की रस्सियां खुल गईं और वे जमीन पर गिर पड़ीं। इन सब अपशकुनों से ग्वाले बहुत डर गए। डर के मारे उन सबका मन भगवान की ओर चला गया। वे भगवान विष्णु की प्रशंसा में अनेक प्रकार के गीत गाने लगे। कन्नगी की आंखें अभी भी कोवलन को देखने की प्रतीक्षा में लगी थीं।

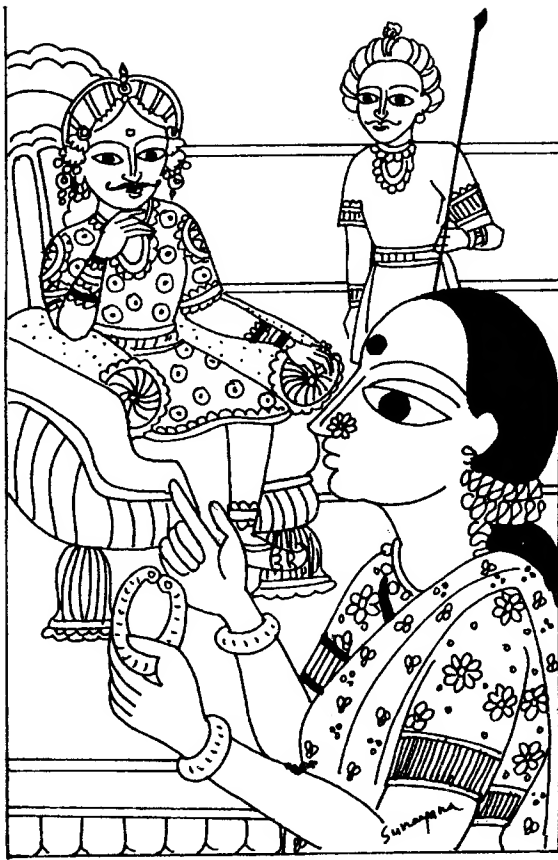
कोवलन नहीं आया। आखिर में एक बुरी खबर आई। एक आदमी ने बताया, 'वे कहते हैं कि कोवलन ने रानी का कड़ा चुरा लिया है और उसे फांसी की सजा दे दी गई है।' यह आसमान से बिजली गिरने जैसा था। इस बिजली ने जैसे सब कुछ जला कर राख कर दिया। बिजली गिरने के पहले कोई चेतावनी भी नहीं सुनाई दी। यह झटका कन्नगी के लिए असहय था। वह कांप उठी और रोने लगी। वह नई जगह पर नये जीवन की आशा में आई थी। पर इसकी बजाय उसके पास जो कुछ था और जिसे वह ठीक करना चाहती थी, वह भी नष्ट हो गया।

उसका गुस्सा चरम पर पहुंच गया। सूरज से गवाही देने की प्रार्थना करते हुए उसने पूछा, 'सूर्य देव, क्या मेरा पति चोर है?' सूर्य ने जवाब दिया, 'कन्नगी तुम्हारा पति चोर नहीं है। इस शहर में उसके ऊपर गलत आरोप लगा दिया गया। यह जगह जल कर नष्ट हो जाएगी।' कन्नगी उठी। उसके उलझे और खुले बाल पीठ पर फैले थे। उसने बचा हुआ दूसरा कड़ा अपने हाथ में लिया और सड़क पर बाहर निकल पड़ी। उसने गुस्से में भर कर लोगों से पूछा, 'क्या यहां कोई देवता नहीं रहता? क्या यहां कोई बुद्धिमान वृद्व नहीं रहता? क्या यहां कोई पवित्र औरत नहीं रहती?' वह कोवलन की लाश के पास पहुंची। मृत शरीर को सहलाते हुए वह रोने लगी। उसने कहा, 'मैं अन्याय पर बिना सवाल उठाए नहीं रहूंगी। मैं न्याय की मांग करूंगी। मैं न्याय किए जाने पर जोर दूंगी। मुझे न्याय चाहिए।'

उसने न्याय की मांग करने की प्रतिज्ञा की और अपने रास्ते पर चल पड़ी।



जब मासूम लोगों का दुख गुस्से में बदल जाता है तो उसे कौन रोक सकता है? कोई नहीं। सत्ता में बैठे शक्तिशाली लोग भी उसे नहीं रोक सकते। जब कन्नगी चली तो उसके हाथ में कड़ा था, उसके बाल बिखरे थे, उसकी आंखों से लगातार आंसू बह रहे थे और उसकी सांस से मानो आग निकल रही थी। कन्नगी न्याय की मांग करने राजा के महल जा पहुंची। महल की चौकीदारी करने वाले दरबान उसे देख कर डर से पीले पड़ गए। कन्नगी ने उनसे कहा, 'देखो चौकीदारो! तुम्हारे राजा ने न्याय करने में गलती की है। वह न्याय के रास्ते से हट गया है। जाओ! अपने राजा से कहो कि मैं न्याय की मांग करती हूं। उससे कहो कि जिस औरत के पति को अन्याय से मार डाला गया है, वह आई है।' चौकीदार घबराहट के मारे लड़खड़ा गया। उसने पहले कभी किसी को राजा के बारे में इस तरह अपमानजनक तरीके से बोलते नहीं सुना था। वह राजा के पास भागा। चौकीदार ने राजा से कहा, 'महाराज! फाटक पर एक औरत आई है जिसके हाथ में एक कड़ा है। वह देवी काली की तरह लग रही है। उसके पति की मृत्यु हो गई है। वह बहुत दुखी लग रही है।' राजा ने चौकीदार से कहा, 'उसे आने दो।'



कन्नगी दरबार में आई। वह दरबार में इस तरह आई जैसे उसने हमला बोल दिया हो। राजा ने दयालुता से पूछा, 'महिला! तुम कौन हो?' कन्नगी का गुस्सा फूट पड़ा। राजा के सामने होने के बावजूद उसे बिल्कुल डर नहीं लग रहा था। इतने वर्षों से वह चुपचाप धैर्य धारण किए रही थी। वह बहुत शांत, बहुत चुपचाप रहती थी। जिसके पास धैर्य होता है, उसमें हिम्मत भी होती है। अब वह अपना गुस्सा दबा नहीं पा रही थी। उसने राजा से कहा, 'राजा तुम बिना सोचे फैसला करते हो!' कन्नगी द्वारा राजा को संबोधित करने के तरीके से सभी दरबारियों की सांसें थम गईं। वे भयभीत हो गए।

कन्नगी ने अपनी कहानी सुनाई। 'मैं चोल देश से आई हूं। चोल राज्य में मनु नीति चलती है और वहां का राजा कभी न्याय के रास्ते से नहीं हटता। मेरा अपना जन्म स्थान पूम्पुहर है। मेरे पति का नाम कोवलन था और मेरा नाम कन्नगी है। हमारा संबंध व्यापारियों के एक बड़े खानदान से है। भाग्य के मारे हम मदुरै आ गए। मेरे पति मेरा कड़ा बेचने बाजार गए। उनका सिर काट दिया गया। यह किस तरह का न्याय है?' कन्नगी ने पूछा। राजा को सुनार की धोखाधड़ी के बारे में कुछ नहीं मालूम था। इसी कारण राजा ने कहा, 'तुम्हारा पति चोर था। चोर को फांसी देना कानून की मांग है। यह न्यायोचित है।' अब सीमा टूट गई। कन्नगी अपने गुस्से को और रोक नहीं पाई। उसने राजा से पूछा, 'मेरे कड़ों के भीतर गोमेद भरे थे। तुम्हारी रानी के कड़ों में कौन से जवाहरात भरे थे?' राजा ने कहा, 'मेरी रानी के कड़ों में मोती भरे थे।' कन्नगी ने मांग करते हुए कहा, 'तुमने मेरे पति से जो कड़ा लिया था, वह कहां है? वह कड़ा जिसे तुम चुराया हुआ मानते हो।' राजा ने कड़ा मंगवाया। कन्नगी एक सेकेंड के लिए भी नहीं हिचकी। उसने फौरन कड़ा लेकर जमीन पर इतनी जोर से पटका कि सभी लोग आश्चर्य कर उठे। कड़ा टूट गया। उसमें भरे जवाहरात चारों और बिखर गये और उसमें से एक राजा के चेहरे से भी जा टकराया। वे सभी गोमेद थे। इसका मतलब कि यह कन्नगी का कड़ा था, रानी का नहीं।

सत्य राजा के सामने आ गया। वह कांप उठा। 'हे भगवान! इसका मतलब मैंने गलती की। मैंने भयंकर गलती की! मैंने जल्दबाजी में एक निर्दोष आदमी की जान ले ली।' यह सोचते हुए राजा दुख के सागर में डूब गया। मारे दुख के वह कह बैठा, 'मैं राजा नहीं हूं! मैं चोर हूं। हां, मैं चोर हूं!' इतना कह कर वह जमीन पर गिर पड़ा और मर गया। रानी ने राजा को मर कर गिरते देखा तो वह बेहोश हो गई। फिर वह कभी होश में नहीं आई। कन्नगी उन सब के बीच में विस्फोट हुए ज्वालामुखी की तरह खड़ी थी। उसका गुस्सा ठंडा नहीं हुआ था। उसे शांत करने के लिए स्वयं अग्नि देव आए। अग्नि देव ने मदुरै को जला कर राख कर दिया। अग्नि ने सभी को जला डाला, बस केवल कुछ पवित्र लोग बचे।

कन्नगी जब पूर्व दिशा से मदुरै आई थी तब उसका पति उसके साथ था।



अब वह मदुरै छोड़ कर पश्चिम की ओर चली, पर पति उसके साथ नहीं था। उसे लगा कि अब जीना बेकार है। उसने अपनी चूड़ियां तोड़ डालीं और वह अकेले रोती हुई चल दी। वह एक पहाड़ी पर चढ़ गई। परम्परा कहती है और कहानियां इस बात पर जोर देती हैं कि कन्नगी वहां तुरन्त एक देवी के रूप में परिवर्तित हो गई। कन्नगी का एक मंदिर तमिलनाडु में है। उसका एक मंदिर केरल में भी है। उसका एक मंदिर श्रीलंका में भी है। कन्नगी ने गलती करने वाले राजा पर सवालिया निशान लगाया और उसे चुनौती दी। कन्नगी साहसी महिला का प्रतीक है। कन्नगी की कहानी हमारे भीतर साहस जगाती है और हमें शान से जीने की प्रेरणा देती है।











भारत ज्ञान विज्ञान समिति